एक महापुरूष ब्रह्मा बाबा

मुझे उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रति बहुत आकर्षण ही नहीं अपितु श्रद्धा भी होती है जो संकटों में से गुजरता हुआ मंजिल तय कर लेता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) कुछ ऐसे ही महापुरूष थे जिन्होंने साधारण परिवार में जन्म लिया, साधारण शिक्षा-दीक्षा होते हुए परिस्थितियों से उत्साहपूर्वक लड़कर एवं संघर्षमय परिस्थितियों में परमात्मा तक अपने को विकसित कर लेना सचमुच अपने आप में एक चमत्कार है। ज्ञान की गंगा बह रही है हर किसी के ऊपर से परंतु कोई उसका महत्व नहीं समझ पा रहा। संतरा, नींबू, केला, आम आदि मनुष्य के उपयोग में आते ही अपनी कहानी स्वाद और स्वास्थ्य के रूप में कहना शुरू कर देते हैं। उन्मुक्त होकर अपने सम्पूर्ण गुण-धर्म बताकर परे हट जाते हैं। मोर, कोयल, कौआ, कबूतर सब बता रहे हैं, देखो आवाज कौन-सी मनभावन है, पर हमारा अंहकार पास से गुजरती हुई ज्ञान गंगा में गोते लगाने नहीं देता और इसीलिए हमारा अधूरापन हमारे अंदर से फूटकर हमें ही दु:ख देने लगता है। बाबा ने अपने सम्पर्क में आने वाली हर वस्तु, हर व्यक्ति से शिक्षा ग्रहण की। यही कारण है कि वे अच्छाइयों से भरकर हर किसी के लिए आदर्श बन गए और गल्ले के व्यापार से शुरू करके हीरे-मोती के व्यापारी होकर बेशुमार दौलत के मालिक बने। दौलत बहुत नशीली वस्तु है। न मिलने पर मनुष्य हीनता से भर जाता है और मिलने पर जीवन के सही मार्ग से भटक जाता है। धनवानों की हर रोज गाड़ियाँ और बिल्डिंगें पुरानी हो जाती हैं। भोग से जन्मा रोग उनके जीवन में पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ता। वे बहुत भाग्यशाली लोग हैं जो तन को प्रभु की प्राप्ति का साधन बना लेते हैं। परमात्मा को प्राप्त करके धन्य-धन्य बनते हैं। ब्रह्मा बाबा कुछ ऐसे ही गिने-चुने लोगों में से थे जिन्होंने धन से दार्शनिकों, संतों की गोष्ठियाँ, संत समागमों का आयोजन किया। उन्होंने धन के नशे को सिर पर नहीं, पैरों तले दबाकर रखा। भरत हि होहिन, राजमद, विधि हरिहर पद पाय। एक बार बाबा ने फिर सच करके बता दिया कि ऐसा होना सम्भव है। आजकल लोग संतों के विचारों को फैशन, मनोरंजन तथा कोरे बुद्धिवाद के रूप में लेते हैं।

उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि इस धरती पर ईश्वरीय जीवन भी सम्भव है पर बाबा बहुत हिम्मती और धार्मिक थे जो संतों के विचारों के श्रोत खोज लेना चाहते थे। इसके लिए वे निरंतर साधनारत बने रहे और संसार की सारी महानताएँ जिनके प्रकाश में निस्तेज हो जाती है, जिसके प्रकाश में अपने ही अंदर से धन्यता और कृत-कृतज्ञता का संगीत निरंतर बजने लगता है वे शिव बाबा

के साथ मिलकर शिव स्वरूप हो गए परंतु अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने अद्वैत में द्वैत को स्वीकार करके जगत कल्याण का गुरूत्तम कार्य करने का संकल्प कर लिया। परमात्मा कब और कैसे मिलता है इसे भक्त और भगवान ही जानता है। यही कारण है कि धरती पर द्वैत, अद्वैत, विशिष्ट द्वैत की अनेकों शाखाएँ देखी जा सकती है। किसी को सर्वशक्तिवान, सच्चिदानंद, दिव्य ज्योति, बिंदु-स्वरूप, शिव परमात्मा मिले तो परमात्मा के लिए कोई अनहोनी घटना नहीं है, प्रभु छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा होने की दोनों कलाओं में निपुण हैं। इसलिए श्रुति कहती है—अण्गेड जी यान महतो महीयान। यही कारण है कि धरती पर ब्रह्मा बाबा को निमित्त बनाकर ज्ञान की सत्-चित्त बिंदु शिखा का अवतरण हो गया।

नारी समाज सत्य को सरलता से स्वीकार कर लेता है। बाबा ने उसके इस गुण को स्वीकार करके नारी समाज का चयन किया और अपनी अनुभूति को नारियों के अंतर में निवेश करके संसार से विमुक्त करके उन्हें लोक कल्याण में नियुक्त कर दिया जिसका सुपरिणाम जन-जन अनुभव कर रहा है। हिंदुस्तान में दम्भी पुरुषों के बीच रहकर नारियों को धर्माचारियों के रूप में प्रतिष्ठित करना बड़ी निर्भयता, बड़ी सहिष्णुता और आलोचना से परे महापुरूषों का ही काम हो सकता है। हम लोग तो इसकी कल्पना मात्र से ही सिहर उठते हैं। संत और सम्राट, राष्ट्र और समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। नब्बे प्रतिशत समाज को संत अपने विचार और चरित्र से प्रभावित रखता है और दस प्रतिशत समाज को राजा अपनी दंडशक्ति का भय दिखाकर सर्व जन हिताय सर्व जन सुखाय के पथ पर चिरकाल से मानव चलाता रहा है। परंतु प्रजातंत्र के युग में संतों का समन्वय टूट गया है। एक प्रकार की होड़ सत्ता के लिए चल पड़ी है। इस युग में नए संत समाज की जरूरत थी जो सत्ता के साथ समन्वय स्थापित कर सके। सौभाग्य की बात है कि उस कमी की पूर्ति प्रजापिता ईश्वरीय विश्वविद्यालय करने लगा है। यही कारण है कि सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर बैठे विशिष्ट लोग भी इस विश्वविद्यालय के कार्यो को अपना कार्यक्रम बताकर बखान करते हैं। कहीं ऐसा न हो कि एक दिन विश्व सरकारें एकमात्र इन देवियों को ही आदर्श संत के रूप में घोषित कर दें। इस संस्थान की आने वाली पीढ़ी की योग्यता उज्ज्वल भविष्य की है। कुछ देवियाँ तो टेलीविजन, रेडियो आदि प्रचार के सभी साधनों का उपयोग करने लगी हैं और लोगों के मुख से हमने उनकी बहुत प्रशंसा भी सुनी है। अंत में हमारी परमात्मा से प्रार्थना है कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय को पथभ्रष्ट, दिक्भ्रान्त समाज को सत्पथ पर लाने की शक्ति दे जिससे मानव समाज विज्ञान के चमत्कारों को प्राणी मात्र के कल्याण में नियोजित कर इस धरती को कल्याणकारी स्वर्ग बना सकें।